वर्ण विचार

वर्ण भाषा की प्रारंभिक इकाई है । कोई वर्ण या वर्णसमूह सार्थकता प्राप्त कर शब्द बनते हैं, शब्द विभक्ति से युक्त हो पद बनते हैं और पदों का क्रमबद्ध तथा व्यवस्थित समूह वाक्य कहलाता है ।

कंठ से लेकर ओठ तक कंठ, कोमल तालु, तालु, मूर्द्धा, दाँत, जीभ, वर्त्स, ओठ आदि के सहारे मनुष्य जितनी मूल ध्वनियाँ निकाल सकता है, उनको व्यवस्थित कर वह अपनी भाषा तैयार करता है ताकि अपने भाव या विचार की अभिव्यक्ति कर सके ।

किन्हीं दो वस्तुओं की टकराहट, घर्षण या वायु प्रकंपन से उत्पन्न नाद को ध्वनि कहा जाता है। कंठ से लेकर ओठों तक विभिन्न स्वरतंत्रियों से उत्पन्न ध्वनियों के लिखित संकेत-चिह्न को वर्ण कहा जाता है ।

वर्ण के पर्याय के रूप में 'अक्षर' कां भी प्रयोग होता रहा है । (वर्ण से अक्षर की भिन्नता के विषय में वैयाकरण एकमत नहीं हैं ।) वर्ण जिस रूप में अंकित होता है उसे लिपि कहा जाता है यानी वर्ण रूप ही लिपि है ।

देवनागरी लिपि में स्वरों का स्वतंत्र प्रयोग भी होता है और व्यंजन के साथ जुड़ने पर मात्रा के रूप में उनके संकेत चिह्न का भी प्रयोग होता है ।

वर्ण के दो भेद किए जाते हैं - स्वर और व्यंजन ।

स्वर उस वर्ण को कहा जाता है जिसका उच्चारण बिना किसी अन्य वर्ण के होता है । जैसे - अ, इ, उ, आ, ओ, ए आदि ।

व्यंजन उस वर्ण को कहा जाता है जिसके उच्चारण के लिए स्वर की सहायता लेनी पड़ती है । जैसे - क, ख, च, प, द, त, न आदि ।

हिंदी वर्णमाला में सारे व्यंजन 'अ' स्वर से युक्त होते हैं । भाषा में प्रयोग की आवश्यकता के अनुसार उनमें अन्य स्वर लगते हैं । स्वरविहीन व्यंजन का उच्चारण संभव नहीं होता । लिखित रूप में स्वरविहीनता (केवल व्यंजन) के सूचक के रूप में वर्ण के नीचे एक चिह्न (्) का प्रयोग होता है जिसे **हल्** कहा जाता है और उससे युक्त वर्ण को **हलंत** कहा जाता है । 'हल्' शब्द का 'ल्' हलंत कहा जाएगा ।

स्वर - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ - 11

(इनमें अ, इ, उ, ऋ मूल स्वर हैं)

क ख ग घ ङ

च छ ज झ ञ

ट ठ ड ढ ण

त थ द ध न

प फ ब भ म - 25

य र ल व श ष स ह	–	08
ड़ ढ़	–	02
क्ष त्र ज्ञ	–	03
	कुल =	**49**

: (विसर्ग)		
ं (अनुस्वार)		
ँ (चंद्रबिंदु)		
ॅ (अर्द्धचंद्र)	–	04
	कुल =	**53**

हिंदी भाषा की लिपि देवनागरी है । इसमें अंक निम्नलिखित रूप में लिखे जाते हैं । कुछ अंकों के वैकल्पिक रूप भी हैं । वे साथ ही कोष्ठक में निर्दिष्ट हैं –

0	–	शून्य
१ (१)	–	एक
२	–	दो
३	–	तीन
४	–	चार
५	–	पाँच
६	–	छह
७	–	सात
८ (८)	–	आठ
९ (९)	–	नौ
१०	–	दस

वर्णभेद

उच्चारण की दृष्टि से वर्णभेद – 1. कण्ठ्य 2. तालव्य 3. मूर्द्धन्य 4. दंत्य 5. वर्त्स्य 6. ओष्ठ्य 7. दंतोष्ठ्य 8. स्वरयंत्रमुखी

पूरी हिंदी वर्णमाला को दो भागों में बाँटा गया है – (क) स्वर वर्ण और (ख) व्यंजन वर्ण । (संधि में विसर्ग संधि की स्वतंत्र स्थिति है परंतु विसर्ग (:) को हिंदी वैयाकरणों ने व्यंजन के ही अंतर्गत रखा है । विसर्ग अयोगवाह होने के कारण स्वर तथा व्यंजन दोनों से स्वतंत्र हैं । स्वरों में अ, इ, उ, ऋ ह्रस्व, यों कहें कि मूल स्वर हैं । आ, ई, ऊ, ए, ओ, औ ये दीर्घ स्वर हैं । ये स्वर यौगिक होते हैं। जैसे –

अ + अ = आ	इ + इ = ई	उ + उ = ऊ
अ + इ = ए	अ + ए = ऐ	अ + उ = ओ
अ + ओ = औ		

ॲ - यह अनुनासिक अर्द्धस्वर है ।

पहला उच्चारण स्थान कंठ होता है । उसके बाद तालु (कोमल तालु, कठोर तालु), मूर्द्धा, दंत और ओठ की क्रमिक स्थिति होती है । कंठोष्ठ्य, दंतोष्ठ्य तथा कंठ तालव्य यानी द्विस्थानीय वर्ण भी होते हैं ।

1. कंठ्य - अ, आ, ह और कवर्ग (कंठ से उच्चरित)
2. तालव्य - इ, ई, श और चवर्ग (तालु से)
3. मूर्द्धन्य - ऋ, र, ष और टवर्ग (मूर्द्धा से)
4. दंत्य - ल, स और तवर्ग (दंत यानी दाँत से)
5. ओष्ठ्य - उ, ऊ, पवर्ग (ओठों से)
6. कंठतालव्य - ए, ऐ (कंठ और तालु दोनों के योग से)
7. कंठोष्ठ्य - ओ, औ (कंठ और ओठ के योग से)
8. दंतोष्ठ्य - व (दाँत तथा ओठ के योग से)
9. नासिक्य - ङ, ञ, ण, न, म इनमें स्थान वही होने पर भी उच्चारण में नासिका का सहयोग लग जाता है ।
10. अनुनासिक (·) चंद्रबिंदु (ँ) यह स्वर होता है । संबंधित स्वर या व्यंजन के साथ ही इसका प्रयोग संभव है । इसमें नासिका विवर का विशेष प्रयोग होता है ।
11. अर्द्धचंद्र - यह भी ओष्ठ्य वर्ण है ।

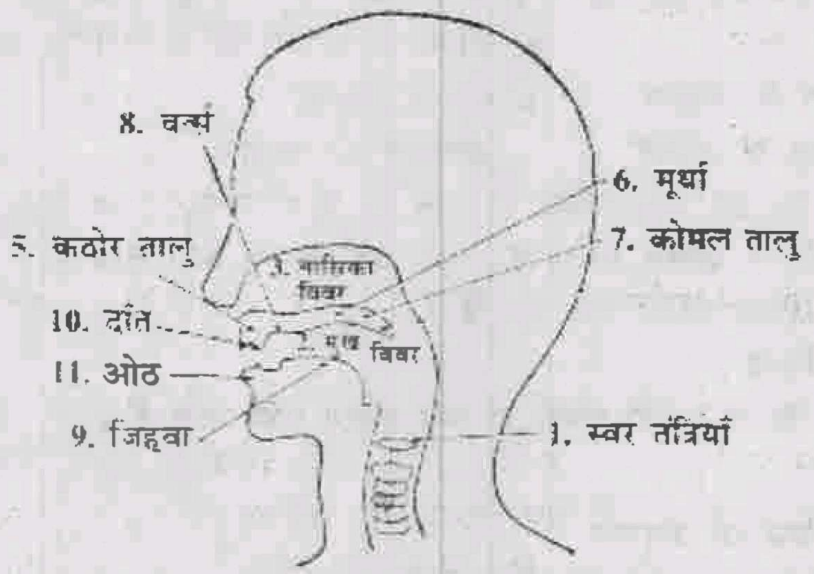

उच्चारण स्थान

उच्चारण समय के अनुसार वर्णभेद

(क) ह्रस्व - जिसके उच्चारण में न्यूनतम समय लगे । जैसे - अ, इ, क, ह आदि ।

(ख) दीर्घ - जिसमें ह्रस्व से दूना समय लगे । इसमें दो मात्राएँ होती हैं । जैसे - आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ । हिंदी भाषा के वर्तमान रूप में किसी भी स्वर के उच्चारण में दो से अधिक मात्राओं की आवश्यकता नहीं पड़ती ।

अ + अ = आ	आ + उ = ओ
अ + आ = आ	आ + ऊ = ओ
आ + आ = आ	अ + ए = ऐ
अ + इ = ए	अ + ऐ = ऐ
अ + इ = ए	अ + ओ = ओ
अ + उ = ओ	अ + औ = औ

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि ह्रस्व की एक मात्रा के साथ एक मात्रा के मिलन से दो मात्राओं का रूप दीर्घ ही बनता है ।

ह्रस्व और दीर्घ को ही छंद शास्त्र में लघु और गुरु कहा जाता है । अनुनासिक (ँ) स्वभावत: ह्रस्व होते हैं परंतु दीर्घ स्वर के साथ होकर ये भी दीर्घ हो जाते हैं; जैसे - हाँ, आप क्यों नहीं हँसिएगा !

व्यंजनों के वर्ग

(क) उच्चारण स्थान के आधार पर 1. कंठ्य 2. तालव्य 3. मूर्धन्य 4. दंत्य 5. ओष्ठ्य 6. कंठ तालव्य 7. कंठोष्ठ्य 8. दंतोष्ठ्य 9. नासिक्य 10. अनुनासिक 11. वर्त्स्य ।

(ख) आभ्यंतर प्रयत्न के अनुसार - 1. स्पर्श–संघर्षी 3. अनुनासिक 4. अनुनासिक्य 5. पार्श्विक 6. प्रकंपी 7. उत्क्षिप्त 8. अंत:स्थ या अर्द्धस्वर

(ग) बाह्य प्रयत्न के अनुसार - 1. घोष 2. अघोष

(घ) नि:सृत वायु के अनुसार - 1. अल्पप्राण 2. महाप्राण

1. क से लेकर म तक 25 स्पर्श व्यंजन हैं । इन 25 में ही पाँच (ङ ञ ण न म) नासिक्य हैं ।
2. अंत:स्थ - य और व अंतस्थ व्यंजन हैं । इन्हें अर्धस्वर भी कहा जाता है ।
3. प्रकंपी - र को प्रकंपी व्यंजन माना गया है ।
4. उत्क्षिप्त - ड़ और ढ़ ।
5. संघर्षी - श, ष, स, ह । इन्हें संघर्षी या उष्म व्यंजन कहा जाता है ।
6. पार्श्विक - ल ।

बाह्य प्रयत्न में स्वरतंत्रियों के अनुसार

इसके अनुसार वर्णों के दो भेद होते हैं - घोष और अघोष ।

1. **घोष :** सभी स्वरों के अलावा सभी वर्गों का तीसरा, चौथा और पाचवाँ वर्ण घोष होता है । इनके अतिरिक्त य, र, ल, व और ह भी घोष हैं ।

2. **अघोष :** प्रत्येक वर्ग का पहला और दूसरा वर्ण अघोष होता है । इनके अतिरिक्त श, ष, स और विसर्ग (:) अघोष हैं ।

घोष का अर्थ नाद होता है । यह वायु के कंपन से पैदा होता है । दीर्घ वायु कंपन से युक्त वर्णों को घोष तथा इनसे मुक्त वर्णों को अघोष कहते हैं ।

अघोष	घोष
क, ख	ग, घ, ङ
च, छ	ज, झ, ञ
ट, ठ	ड, ढ, ण
त, थ	द, ध, न
प, फ	ब, भ, म
श, ष, स, विसर्ग	स्वर, य, र, ल, व, ह

श्वास की मात्रा के अनुसार

इसके अनुसार भी वर्णों के दो भेद होते हैं- अल्पप्राण और महाप्राण ।

(क) अल्पप्राण : वैसे वर्ण जिनके उच्चारण में श्वास कम निकलता है उन्हें अल्पप्राण वर्ण कहा जाता है । स्वरों के अतिरिक्त प्रत्येक वर्ग के प्रथम, तृतीय और पंचम वर्ण अल्पप्राण होते हैं ।

(ख) महाप्राण : वैसे वर्ण जिनके उच्चारण में श्वास अधिक निकलता है उन्हें महाप्राण वर्ण कहा जाता है । प्रत्येक वर्ग के द्वितीय और चतुर्थ वर्ण महाप्राण होते हैं । इनके अतिरिक्त ढ़, श, ष, स और ह महाप्राण हैं ।

अल्पप्राण	महाप्राण	अल्पप्राण	महाप्राण	अल्पप्राण
क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
स्वर, य, र, ल, व	ढ़, श, ष, स, ह			

मात्राएँ

स्वरों और व्यंजनों में मौलिक और सर्वतंत्र स्वतंत्र वर्ण स्वर ही हैं परंतु भाषिक प्रयोग में व्यंजनों को सक्षमता प्रदान करने के लिए ये जिन चिह्नों का रूप धारण करते हैं उन्हें मात्रा कहते हैं ।

(क) अ की मात्रा किसी व्यंजन के साथ अव्यक्त होती है ।

(ख) विसर्ग एकमात्र ऐसा व्यंजन है जिसका स्वरहीन उच्चारण संभव होता है । उसके बाद कोई मात्रा नहीं लगती ।

(ग) अन्य मात्राएँ द्रष्टव्य हैं –

आ – ा रा = राम
इ – ि हि – हिसाब
ई – ी नी – नीम
उ – ु कु – कुलंजन
ऊ – ू मू – मूसल
ऋ – ृ मृ – मृत
ए – े ले – लेख
ऐ – ै कै – कैसा
ओ – ो दो – दोहन
औ – ौ दौ – दौलत

अनुनासिक का चंद्रबिंदु (ँ), अर्धअनुनासिक का अर्धचंद्र (ॅ), नासिक्य का अनुस्वार (ं) और विसर्ग (ः) भी मात्राओं में गिने जाते हैं ।

कुछ नियम

1. अनुनासिक स्वर के लिए चंद्रबिंदु का प्रयोग होता है । जैसे – हँसना ।
2. इ, ई, ए, ऐ, ओ, औ से युक्त व्यंजनों में चंद्रबिंदु के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग प्रचलित हो गया है । जैसे – खिंचाई, नींव, भेंट, चोंच, भौंचक आदि ।
3. नासिक्य पंचम वर्णों के संयुक्त रूप के विकल्प में अनुस्वार का प्रयोग होता है । जैसे – कम्पन – कंपन, चम्पा – चंपा आदि ।
4. स्पर्श वर्णों के साथ प्रयुक्त अनुस्वार स्वत: उस वर्ण के पंचम वर्ण के रूप में उच्चरित होता है ।
5. पराङ्मुख और वाङ्मय जैसे कुछ शब्दों में पंचम वर्ण का संयोग अन्यवर्गीय वर्ण के साथ होता है, परंतु इनमें अनुस्वार का प्रयोग नहीं होता ।
6. प्रद्युम्न, जन्मांध, मृण्मय जैसे शब्दों में पंचम वर्ण के साथ पंचम वर्ण का संयोग हुआ है पर इनमें पंचम वर्ण के लिए अनुस्वार का प्रयोग नहीं होता ।

संयोग (संयुक्ताक्षर)

(i) स्वर संयोग : स्वरों में ए, ऐ, ओ, औ संयुक्त स्वर हैं ।

अ + इ = ए अ + ए = ऐ
अ + उ = ओ अ + ओ = औ

स्वरों की संयुक्तता की विशेषता यह है कि ये अपने अर्ध रूप में कहीं प्रयुक्त नहीं होते हैं । 'अ' भी पूर्ण स्वर है, इ भी पूर्ण स्वर है और इन दोनों के मेल से बना रूप 'ए' भी पूर्ण तथा स्वतंत्र स्वर होता है ।

(ii) व्यंजन संयोग

(क) व्यंजन स्वर के साथ संयुक्त होने पर उसे अपने में समाहित कर या मात्रा के रूप में आगे या पीछे स्वीकार कर पूर्ण वर्ण का रूप प्राप्त करते हैं ।

(ख) किसी अन्य व्यंजन से संयुक्त होने के लिए व्यंजन को अपने स्वर का त्याग करना पड़ता है। स्वर का त्याग करने के उपरांत उनके आधे रूप के लेखन के लिए हल् (्) चिह्न लगाना होता है या उनके आधे रूप के लेखन की व्यवस्था भी देवनागरी लिपि में है । जैसे - सिद्धि या सिद्‌धि । जिस वर्ण में हल् का चिह्न लगा होता है उसे हलन्त वर्ण कहते हैं । 'हल्' का अर्थ व्यंजन होता है । स्वर निकाल देने पर किसी व्यंजन के अंत में भी व्यंजन ही बचता है इसलिए उसे हलन्त (हल् + अंत) कहते हैं । जैसे - क्, ख्, ग्, घ्, ङ्, च्, छ्, ज् आदि ।

शुद्ध, चिह्न, ह्रस्व और वक्र में ध, न और र पूर्ण वर्ण हैं, अर्द्ध यानी मूल व्यंजन वर्ण द्, ह् और क् हैं ।

बलाघात

बल का आघात या आक्षेप । उच्चरित भाषा में किसी वर्ण या पद पर जो स्वाभाविक या उद्देश्य विशेष से विशेष 'जोर' (स्वराघात) दिया जाता है उसे बलाघात कहते हैं ।

इसके दो भेद होते हैं – (क) वर्णगत (ख) पदगत

(क) जब किसी शब्द के उच्चारण में किसी वर्ण विशेष पर बलाघात होता है तो उसे वर्णगत बलाघात कहते हैं । बलवान, अनबन, कपड़ा, कत्थक, नाच आदि के उच्चारण में वा, ब, क, क, ना पर स्वाभाविक बलाघात हो जाता है । यह बलाघात वर्णगत कहा जाएगा ।

(ख) पदगत बलाघात वाक्यों में देखे जाते हैं । उद्देश्य विशेष से यानी विशेष अर्थ व्यंजित करने के लिए पद विशेष पर जो बलाघात किया जाता है उसे पदगत बलाघात कहा जाता है । जैसे - आपको <u>ऐसे</u> नहीं बोलना चाहिए । मैं <u>पैदल</u> चला आ रहा हूँ ।

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित पदों पर बलाघात द्वारा अर्थ को विशिष्टता प्रदान किया गया है । ध्यान रखना चाहिए कि बलाघात उच्चरित भाषा क्षेत्र की प्रक्रिया है । लिखित भाषा में इसकी अवधारणा अभ्यास पर ही निर्भर होती है । इसके संसूचन के लिए किसी चिह्न या रीति का विकास व्यावहारिक स्तर पर विकसित नहीं हुआ है ।

मोटे तौर पर बलाघात की स्थितियाँ इस प्रकार होती हैं -

(i) प्रायः यह संयुक्त वर्ण के पहले वर्ण पर लगता है । जैसे - कर्ण, उच्चारण आदि । इनमें संयुक्त वर्ण से पहले के वर्ण 'क' और 'उ' पर जोर दिया गया है ।

(ii) विसर्गवाले वर्ण पर बलाघात होता है । जैसे - प्रायः, दुःख आदि ।

(iii) इ, उ, ऋ वाले व्यंजन के पूर्ववर्ती स्वर पर भी बल देना पड़ता है । जैसे - यदि, मधु, महर्षि आदि ।

सुरलहर या अनुतान

यह भी उच्चरित भाषा का ही एक प्रयोग है, जिससे अर्थव्यंजना तथा भाषिक सौंदर्य में वृद्धि होती है ।

सुरलहर का तात्पर्य सुर यानी सुर की लहर (देर तक तरंगित ध्वनिक्रम) है । यह कभी ऊपर की ओर बढ़ती है तो कभी नीचे की ओर । इसे क्रमशः आरोह और अवरोह कहते हैं । यह अर्थ को प्रभावित कर उसमें परिवर्तन कर जाती है । इसके आधार पर ही प्रश्नवाचक, विस्मयवाचक आदि का अंतर आता है । इनके अलावा अनेक ध्वन्यर्थ भी निकलते हैं । सुरलहर या अनुतान वाक्य में प्रयुक्त पदों में देखे जाते हैं । स्वतंत्र शब्दों में इसका कोई प्रयोग नहीं होता । उदाहरण के लिए कुछ वाक्य द्रष्टव्य हैं -

(क) अच्छा मैं देख लूँगा । - स्वीकृतिसूचक - सुरलहर के अवरोह की स्थिति

(ख) अच्छा ! मैं देख लूँगा । - धमकी - सुरलहर के आरोह की स्थिति

संधि

संधि शब्द का अर्थ होता है मेल । संयोग और संधि में स्पष्ट तथा पर्याप्त भिन्नता होती है । संयोग में वर्णों का मात्र योग होता है । संधि में नैसर्गिक संघात होता है जिससे एक नया स्वरूप सामने आता है । वह नया स्वरूप भाषा (हिंदी भाषा) की शक्ति और सुंदरता दोनों को बढ़ा जाता है । विद्यालय, करावलंब, चरणोदक, जलप्लावन आदि में दो सर्वथा अलग-अलग शब्दों के वर्णमूलक मेल से भाषा में सौंदर्य, संक्षिप्तता तथा सुगमता उत्पन्न होती है । पवन, नयन, शयन आदि स्वतंत्र शब्द हैं परंतु इनकी रचना या इनके गठन में वर्णगत संधि की भूमिका की महत्ता का पता पो-अन, ने-अन, शे-अन के अलग-अलग होने पर चलता है ।

दो वर्णों के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है उसे संधि कहते हैं । विकार शब्द परिवर्तनवाचक है जो एक नए स्वरूप में सामने आता है । जैसे **अ और अ** के मिलने पर **आ** होता है या त् और अ के मिलने पर त का द हो जाता है । आप देखें -

(क) देव+अंश = देवांश

(ख) जगत् + अंबा = जगदंबा

संधि के उदाहरण व्याकरण की व्यावहारिक व्यवस्था के अंग है । वस्तुतः हिंदी या देवनागरी वर्णमाला के अ, इ, उ, ऋ के अलावा सारे स्वर और सारे महाप्राण व्यंजन संधि के शिल्प में ही निर्मित हुए हैं । जैसे - आ = अ + अ

ए = अ + ई

संधि के भेद

संधि के तीन भेद होते हैं - (क) स्वर संधि (ख) व्यंजन संधि (ग) विसर्ग संधि

स्वर संधि में विकार स्वरगत होता है, व्यंजन में व्यंजनगत और विसर्ग में संधि का सीधा प्रभाव विसर्ग पर पड़ता है । देव + अंश में संधि होने पर अ (दोनों स्वर) प्रभावित हो रहे हैं परंतु जगत् + अंबा में त् प्रभावित होकर द् बन जा रहा है और उसमें अ मिलकर उसे द बना देता है । इसलिए इसमें व्यंजन संधि है । इसी तरह पुर + कार में विसर्ग के साथ 'क' का मेल हो रहा है परंतु विकार विसर्ग (:) में ही

आता है और वह स्वरहीन व्यंजन 'स्' में बदल जाता है । वह हलंत स् (या स्) ही 'क' से मिलकर पुरस्कार शब्द बनाता है ।

स्वर संधि : जहाँ किसी स्वर के साथ किसी स्वर का ही मेल हो वहाँ स्वर संधि होती है । इसके पाँच भेद होते हैं - (क) दीर्घ संधि (ख) गुण संधि (ग) वृद्धि संधि (घ) यण् संधि (ङ) अयादि संधि ।

(क) दीर्घ संधि : जहाँ ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ, ऋ में किसी से यदि वही स्वर मिले तो वहाँ दीर्घ स्वर संधि होती है । दीर्घ संधि में दोनों स्वर मिलकर दीर्घ रूप में परिणत हो जाते हैं । जैसे -

अन्न + अभाव = अन्नाभाव	(अ + अ = आ)
शिव + आलय = शिवालय	(अ + आ = आ)
विद्या + अर्थी = विद्यार्थी	(आ + अ = आ)
महा + आत्मा = महात्मा	(आ + आ = आ)
कवि + इन्द्र = कवीन्द्र	(इ + इ = ई)
गिरि + ईश = गिरीश	(इ + ई = ई)
मही + इन्द्र = महीन्द्र	(ई + इ = ई)
नदी + ईश = नदीश	(ई + ई = ई)
लघु + उत्तर = लघूत्तर	(उ + उ = ऊ)
गुरु + ऊर्मि = गुरूर्मि	(उ + ऊ = ऊ)
वधू + उत्सव = वधूत्सव	(ऊ + उ = ऊ)
भू + उर्ध्व = भूर्ध्व	(ऊ + ऊ = ऊ)

(हिंदी में दीर्घ ॠ के दो ही उदाहरण हैं - पितृण और मातृण । ये दोनों भी संधि के उदाहरण से बाहर कहीं नहीं चलते ।

दीर्घ संधि के अपवाद हैं कुलटा और विश्वामित्र जिनका विच्छेद होता है - कुल + अटा तथा विश्व + मित्र ।

(ख) गुण संधि : अ या आ की संधि यदि ह्रस्व या दीर्घ इ, ई, उ, ऊ, ऋ से हो तो उसे गुण संधि कहते हैं। गुण में अ या आ से इ या ई के मेल से ए, अ या आ से उ या ऊ के मेल से ओ और अ या आ से ऋ के मेल से अर् हो जाता है । जैसे -

देव + इन्द्र = देवेन्द्र	(अ + इ = ए)
देव + ईश = देवेश	(अ + ई = ए)
महा + इन्द्र = महेंद्र	(आ + इ = ए)
महा + ईश = महेश	(आ + ई = ए)
चंद्र + उदय = चंद्रोदय	(अ + उ = ओ)
महा + उत्सव = महोत्सव	(आ + उ = ओ)
समुद्र + ऊर्मि = समुद्रोर्मि	(अ + ऊ = ओ)

गंगा + ऊर्मि = गंगोर्मि (आ + ऊ = ओ)
राज + ऋषि = राजर्षि (अ + ऋ = अर्)
महा + ऋषि = महर्षि (आ + ऋ = अर्)

(ग) वृद्धि संधि : अ या आ की संधि यदि ए, ऐ, ओ, औ से हो तो वह वृद्धि संधि कही जाती है । वृद्धि में अ-आ से मिल ए-ऐ का ऐ और ओ-औ का औ हो जाता है । जैसे -

एक + एक = एकैक (अ + ए = ऐ)
मत + ऐक्य = मतैक्य (अ - ऐ = ऐ)
तथा + एव = तथैव (आ + ए = ऐ)
महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य (आ + ऐ = ऐ)
परम + ओजस्वी = परमौजस्वी (अ + ओ = औ)
परम + औषधि = परमौषधि (अ + औ = औ)
महा + ओजस्वी = महोजस्वी (आ + ओ = औ)
महा + औषध = महौषध (आ + औ = औ)

(घ) यण् संधि : ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ से किसी अन्य स्वर का मेल हो तो वहाँ यण् संधि कही जाती है । तात्पर्य यह कि यदि पूर्व में इ है तो बाद में इ के अलावा कोई अन्य स्वर हो । यण् में किसी भिन्न स्वर से मिलकर इ और ई का य्, उ और ऊ का व् और ऋ का र् हो जाता है । जैसे -

यदि + अपि = यद्यपि (इ + अ = य - इ का य्)
इति + आदि = इत्यादि (इ + आ = य - इ का य्)
नदी + अंबु = नद्यंबु (ई + अ = य - ई का य्)
उपरि + उक्त = उपर्युक्त (इ + उ = यु - इ का य्)
सु + आगत = स्वागत (उ + आ = वा - उ का व्)
प्रति + एक = प्रत्येक (इ + ए = ये - इ का य्)
अनु + एषण = अन्वेषण (उ + ए = वे - उ का व्)
प्रति + उपकार = प्रत्युपकार (इ + उ = यु - इ का य्)
अनु + इति = अन्विति (उ + इ = वि - उ का व्)

'ऋ' के उदाहरण अब बहुत ही कम मिलते हैं । इसमें मात्रर्थ, मात्रादेश, पित्रर्थ, पित्रादेश आदि कुछ ही शब्द मिलते हैं जो वर्तमान हिंदी में प्रचलन से बाहर हैं ।

(ङ) अयादि संधि : ए, ऐ, ओ, औ के साथ किसी अन्य स्वर की जब संधि होती है तो उसे अयादि स्वर संधि कहा जाता है । अयादि संधि में भिन्न स्वर से मिलने के बाद ए का अय्, ऐ का आय्, ओ का अव् और औ का आव् हो जाता है और ये अगले स्वर से संयुक्त हो पूर्ण रूप प्राप्त करते हैं । जैसे -

ने + अन = नयन (ए + अ = अय्)
शे + अन = शयन (ए + अ = अय्)
नै + अक = नायक (ऐ + अ = आय्)

पो + अन = पवन (ओ + अ = अव्)
पौ + अक = पावक (औ + अ = आव्)

व्यंजन संधि

किसी व्यंजन के साथ व्यंजन या स्वर की संधि होती है तो उसे व्यंजन संधि या हल् संधि कहते हैं । जगदीश, सदाचार, दिग्गज, तद्धित, संचयन, वाङ्मय, चिन्मय आदि व्यंजन संधि के उदाहरण हैं । जैसे -

जगत् + ईश = जगदीश
दिक् + गज = दिग्गज
सम् + चयन = संचयन (सञ्चयन)
सत् + आचार = सदाचार
तत् + हित = तद्धित
वाक् + मय = वाङ्मय

प्रमुख नियम :

1. यदि क्, च्, ट्, त्, प् के साथ पाँचों वर्गों में किसी के तृतीय, चतुर्थ वर्ण या किसी स्वर वर्ण की संधि हो तो क्, च्, ट्, त्, प् अपने ही वर्ग के तृतीय वर्ण में परिवर्तित हो जाते हैं । जैसे -

दिक् + अंबर = दिगंबर (क् + अ = ग)
दिक् + गज = दिग्गज (क् + ग = ग्ग)
वाक् + ईश = वागीश (क् + इ = गी)
जगत् + ईश = जगदीश (त् + ई = दी)

यानी क् का ग्, च् का ज्, ट् का ड्, त् का द् और प् का ब् हो जाता है ।

2. क्, च्, ट, त्, प् की किसी अनुनासिक वर्ण से संधि होने पर ये अपने ही वर्ग के पंचम वर्ण में बदल जाते हैं। जैसे -

वाक् + मय = वाङ्मय (क् + म = ङ्म)
दिक् + नाग = दिङ्नाग (क् + ना = ङ्ना)
षट् + मास = षण्मास (ट् + मा = ण्मा)
जगत् + नाथ = जगन्नाथ (त् + ना = न्ना)
चित् + मय = चिन्मय (त् + म = न्म)
तत् + मय = तन्मय (त् + म = न्म)

3. यदि त् के बाद श हो तो त् का च् और श का छ हो जाता है । जैसे -

उत् + शिष्ट = उच्छिष्ट
उत् + शृंखल = उच्छृंखल
उत् + श्वास = उच्छ्वास

4. यदि त् के बाद ह हो तो त् का द् और ह का ध हो जाता है । जैसे -

उत् + हार = उद्धार
उत् + हत = उद्धत
उत् + हरण = उद्धरण
तत् + हित = तद्धित

5. यदि त् के बाद ल आए तो त् का ल् हो जाता है । जैसे -

उत् + लास = उल्लास
उत् + लंघन = उल्लंघन
तत् + लीन = तल्लीन

6. यदि तवर्ग के बाद चवर्ग हो तो तवर्ग चवर्ग में बदल जाता है । जैसे -

उत् + चारण = उच्चारण
उत् + ज्वल = उज्ज्वल

7. यदि ह्रस्व स्वर के बाद छ हो तो संधि होने पर छ के पहले च् जुड़ जाता है। जैसे -

परि + छेद = परिच्छेद
अव + छेद = अवच्छेद
आ + छादन = आच्छादन
वि + छेदन = विच्छेदन

8. म् के पश्चात् कोई स्पर्श व्यंजन हो तो म् उस जुड़ने वाले वर्ण के पंचम वर्ण या अनुस्वार में परिवर्तित हो जाता है । जैसे -

किम् + तु = किंतु (न्)
परम् + तु = परंतु (न्)
शम् + कर = शंकर (ङ्)
सम् + देह = संदेह (न्)
सम् + धि = संधि (न्)

9. म् के बाद यदि कोई अंत:स्थ वर्ण (य, र, ल, व) या उष्म वर्ण (श, ष, स, ह) हो तो म् अनुस्वार में परिवर्तित हो जाता है ।

सम् + यम = संयम
सम् + युक्त = संयुक्त
सम् + योग = संयोग
सम् + लग्न = संलग्न
सम् + वाद = संवाद
स्वयम् + वर = स्वयंवर
सम् + सार = संसार

10. न् या म् की संधि यदि किसी स्वर से हो तो वे स्वर न् या म् में ही मिलकर इन्हें पूर्णता प्रदान कर देते हैं । (न् या म् में कोई परिवर्तन नहीं होता जैसे त् का किसी स्वर से मिलने पर होता है ।) जैसे -

अन् + आहार = अनाहर
सम् + आहार = समाहार
अन् + अन्य = अनन्य
अन् + अन्त = अनन्त
अन् + आगत = अनागत
सम् + उदाय = समुदाय
सम् + उचित = समुचित
सम् + आदर = समादर
अन् + आवश्यक = अनावश्यक

11. ष् की संधि यदि त या थ से हो तो त का ट में तथा थ का ठ में परिवर्तन हो जाता है । जैसे -

दुष् + त = दुष्ट
शिष् + त = शिष्ट
ओष् + थ = ओष्ठ
कष् + त = कष्ट
षष् + थ = षष्ठ
पृष् + थ = पृष्ठ

12. स का पूर्ववर्ती (अ या आ से भिन्न) कोई स्वर हो तो संधि होने पर स का ष हो जाता है । जैसे -

वि + सम = विषम
अभि + सेक = अभिषेक

13. सम् या परि उपसर्ग के पश्चात् कृ धातु या उससे बना कोई शब्द हो तो संधि होने पर दोनों के बीच स् या ष् का आगम हो जाता है । जैसे -

सम् + कृत = संस्कृत
सम् + कार = संस्कार
सम् + करण = संस्करण
परि + कार = परिष्कार
परि + कृत = परिष्कृत

14. रामायण, भूषण, तृष्णा, उष्ण आदि कुछ ऐसे शब्द हैं जिनसे शब्दांत के 'न' का 'ण' हो गया है । इसे संस्कृत में णत्व विधान कहा जाता है ।

ऋ, ऱ्, या ष् के परे न रहे और इनके मध्य में चाहे स्वर कवर्ग, पवर्ग, अनुस्वार या न भी रहे तो न के स्थान में ण हो जाता है ।

राम + अयन = रामायण (यह स्वर संधि के अंतर्गत आता है)
भूष् + अन = भूषण (इसमें परवर्ती अ ष् से मिल गया और अंतिम न ण में परिवर्तित हो गया है)
तृष् + ना = तृष्णा
उष् + न = उष्ण
कृष् + न = कृष्ण

प्रमाण, भरण आदि इसी तरह णत्व विधान के उदाहरण हैं ।

15. मंत्री शब्द के बाद मंडल या परिषद् आदि कोई शब्द जुड़े तो त्र के दीर्घ का ह्रस्व हो जाता है -

मंत्री + मंडल = मंत्रिमंडल
मंत्री + परिषद् = मंत्रिपरिषद्

16. 'विश्वामित्र' में दीर्घ संधि के नियम नहीं लागू होते । इस नाम के ऋषिविशेष के लिए अलग नियम है जिसके अनुसार इसकी संधि का विच्छेद होने पर 'विश्व + मित्र' होता है ।

विसर्ग संधि

विसर्ग के साथ स्वर या व्यंजन की संधि को विसर्ग संधि कहा जाता है । जैसे -

निः + छल = निश्छल
निः + चल = निश्चल
पुरः + कार = पुरस्कार
दुः + कर = दुष्कर
निः + आशा = निराशा
निः + मल = निर्मल

इन उद्धरणों में पूर्व में विसर्ग है और बाद में कोई व्यंजन या स्वर, इसलिए इन शब्दों में हुई संधि विसर्ग के साथ किसी व्यंजन या स्वर की संधि है । और इसलिए इसे विसर्ग संधि कहा जाएगा ।

विसर्ग संधि की एक विशेषता यह है कि इसमें पूर्व में ही विसर्ग होता है । बाद में विसर्ग से किसी शब्द के होने की कल्पना नहीं की जा सकती ।

नियम :

1. **विसर्ग का र् :** विसर्ग के पहले अ या आ के अलावा यदि कोई दूसरा स्वर हो और विसर्ग का मेल किसी स्वर, किसी वर्ग का तृतीय, चतुर्थ या पंचम वर्ण या य, र, ल, व, ह से हो तो विसर्ग का र् हो जाता है । जैसे –

निः + आशा = निराशा
निः + आधार = निराधार
निः + उपाय = निरुपाय
दुः + गंध = दुर्गंध
निः + भर = निर्भर
दुः + आत्मा = दुरात्मा

विसर्ग के बाद का वर्ण यदि स्वर न होकर किसी वर्ग का तृतीय, चतुर्थ या पंचम वर्ण या य, र, ल, व, ह होता है तो विसर्ग का 'र्' हो जाता है और वह रेफ बन उससे जा मिलता है । जैसे –

बहिः + गमन = बहिर्गमन

2. **विसर्ग का श्, ष् और स् :** यदि विसर्ग के बाद च या छ हो तो विसर्ग का श्; ट या ठ हो तो विसर्ग का ष् और त या थ हो तो विसर्ग का स् हो जाता है । जैसे –

निः + चय = निश्चय
धनुः + टंकार = धनुष्टंकार
चतुः + टय = चतुष्ट्य
दुः + तर = दुस्तर
हरिः + चंद्र = हरिश्चंद्र

3. **विसर्ग का ष् :** यदि विसर्ग के पहले इ या उ हो और विसर्ग के बाद क, ख, प या फ हो तो विसर्ग का ष् हो जाता है । जैसे –

निः + कपट = निष्कपट
निः + पाप = निष्पाप
दुः + कर = दुष्कर
दुः + कर्म = दुष्कर्म

4. **विसर्ग का विसर्ग :** यदि विसर्ग के पहले अ हो और विसर्ग के बाद क, ख, प, फ हो तो विसर्ग ज्यों का त्यों रह जाता है । जैसे – प्रातः + काल = प्रातःकाल, पयः + पान = पयःपान । पुरस्कार और मनोकामना आदि इसके अपवाद हैं ।

5. **विसर्ग का श्, ष् :** विसर्ग के बाद यदि श, ष या स हो तो विसर्ग का क्रमशः श्, ष् हो जाता है । विकल्प से विसर्ग ज्यों का त्यों भी रह जाता है । व्यवहार में हम दुश्शासन भी कहते हैं और दुःशासन भी । निस्सार या निःसार भी । जैसे –

दुः + शासन = दुश्शासन
निः + सार = निस्सार

दुः + साध्य = दुस्साध्य

6. **विसर्ग से ह्रस्व का दीर्घ :** इ या उ के बाद के विसर्ग की संधि यदि र से हो तो इ और उ दीर्घ (ई, ऊ) में बदल जाते हैं और विसर्ग का लोप हो जाता है । जैसे -

निः + रव = नीरव

निः + रोग = नीरोग

दुः + राज = दूराज

निः + रस = नीरस

7. **विसर्ग का लोप :** यदि विसर्ग के पूर्व अ हो और बाद में कोई अन्य स्वर हो तो संधि होने पर विसर्ग लुप्त हो जाता है । जैसे - अतः + एव = अतएव

8. **विसर्ग का ओ :** यदि विसर्ग के पहले अ हो और विसर्ग के बाद किसी वर्ग का तृतीय, चतुर्थ, पंचम वर्ण या य, र, ल, व, ह हो तो विसर्ग का उ हो जाता है और यह अ से मिलकर ओ बन जाता है । जैसे -

मनः + रथ = मनोरथ

मनः + कामना = मनोकामना

सरः + ज = सरोज

पयः + द = पयोद

यशः + दा = यशोदा

9. यदि विसर्ग के पहले अ हो और विसर्ग के बाद किसी वर्ग का पहला, दूसरा वर्ण या श, ष और स को छोड़कर कोई अन्य वर्ण हो तो विसर्ग का र् हो जाता है । जैसे -

पुनः + आगमन = पुनरागमन

पुनः + जन्म = पुनर्जन्म

अंतः + गत = अंतर्गत

अंतः + ज्ञान = अंतर्ज्ञान

अंतः + धान = अंतर्धान

◆ ◆ ◆